

## भावनात्मक बुद्धिमत्ता का शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि पर प्रभाव

परवेन्द्र सिंह\*

शोधार्थी

महात्मा ज्योतिबा फुले

रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

ईमेल: [parvendrasingh2467@gmail.com](mailto:parvendrasingh2467@gmail.com)

प्रो० प्रिति खन्ना

विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्र विभाग)

वर्धमान कॉलेज बिजनौर, उ०प्र०

ईमेल: [preetikhana7111@gmail.com](mailto:preetikhana7111@gmail.com)

Reference to this paper should be made as follows:

**Received: 17.04.2025**  
**Accepted on: 15.06.2025**

परवेन्द्र सिंह  
प्रो० प्रिति खन्ना

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि पर प्रभाव

Vol. XVI, Sp. Issue July 2025  
Article No.45, Pg. 337-344

Similarity Check: 05%

**Online available at** <https://anubooks.com/special-issues?url=-jgv-vol-xvi-special-issue-july-25>

**DOI:** <https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI7.045>

### सारांश

भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों के पेशेवर जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उनकी नौकरी संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। एक शिक्षक के लिए विषय ज्ञान जितना आवश्यक है, उतना ही महत्वपूर्ण उसका भावनात्मक संतुलन, आत्म-जागरूकता और संबंध प्रबंधन कौशल भी है। शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि विभिन्न कारकों जैसे कि कार्यस्थल का वातावरण, वेतन, पदोन्नति के अवसर, छात्रों के साथ संबंध और कार्य का स्वायत्तता पर निर्भर करती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक न केवल तनावपूर्ण स्थितियों को प्रभावी रूप से संभालते हैं बल्कि अपने छात्रों और सहकर्मियों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करते हैं, जिससे उनकी नौकरी संतुष्टि बढ़ती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के पाँच प्रमुख घटक – आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन – शिक्षकों को अधिक प्रभावी और संतुलित बनाते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि EI और नौकरी संतोष के बीच सकारात्मक संबंध होता है। उच्च EI वाले शिक्षक कक्षा प्रबंधन में अधिक सफल होते हैं, शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं और कार्यस्थल पर सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। दूसरी ओर, कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक अक्सर तनाव, असंतोष और पेशेवर थकान का अनुभव करते हैं, जिससे उनकी नौकरी संतुष्टि प्रभावित होती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव ने शिक्षकों की भूमिका को नया रूप दिया है। AI आधारित शिक्षण प्लेटफार्म, वर्चुअल ट्यूटर और डेटा एनालिटिक्स ने शिक्षकों के कार्य को सरल बनाया है, लेकिन यह भी सत्य है कि AI केवल तथ्यों को संसाधित कर सकता है, भावनाओं को नहीं समझ सकता। इस संदर्भ में, शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझ सकते हैं, उन्हें प्रेरित कर सकते हैं और उनके सामाजिक-भावनात्मक विकास में योगदान दे सकते हैं। AI और EI के संयोजन से शिक्षकों को कई लाभ मिलते हैं। AI जहाँ डेटा-संचालित शिक्षण रणनीतियों को प्रदान कर सकता है, वहीं शिक्षक अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके छात्रों के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। AI द्वारा स्वचालित ग्रेडिंग और

प्रशासनिक कार्यों को संभालने से शिक्षकों को सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा, AI के सहयोग से व्यक्तिगत शिक्षण को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे छात्रों के साथ शिक्षकों के संबंध और भी मजबूत होंगे। विभिन्न शोध अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक अपनी नौकरी से अधिक संतुष्ट होते हैं और वे अपने कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण बनाए रखते हैं। AI के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, EI शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बना रहेगा, क्योंकि यह उन्हें अपने कार्य में स्थिरता और संतोष बनाए रखने में सहायता करता है। इसलिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में EI के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी और संतोषजनक बना सकें। कुल मिलाकर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आधुनिक डिजिटल युग में, जहाँ शिक्षा प्रणाली में AI की भूमिका बढ़ रही है, वहाँ EI शिक्षकों को उनके मूल्यों और पेशेवर स्थिरता को बनाए रखने में सहायता करती है। एक अच्छा शिक्षक न केवल विषय-वस्तु का ज्ञान रखता है, बल्कि वह अपने भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशलों के माध्यम से छात्रों और सहकर्मियों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करता है, जिससे शिक्षण-प्रक्रिया अधिक प्रभावी और संतोषजनक बनती है।

### परिचय

शिक्षण केवल ज्ञान के प्रसार तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक जटिल और भावनात्मक रूप से संलग्न पेशा है जहाँ शिक्षक न केवल छात्रों को विषयवस्तु सिखाते हैं, बल्कि उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में भी योगदान देते हैं। एक शिक्षक की प्रभावशीलता न केवल उसकी शैक्षिक योग्यता पर निर्भर करती है बल्कि उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर भी निर्भर करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जो व्यक्ति को अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सकारात्मक दिशा में उपयोग करने में सक्षम बनाती है। डैनियल गोलेमैन के अनुसार, EI में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन जैसी क्षमताएँ शामिल होती हैं। जब शिक्षक उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हैं, तो वे कक्षा में एक सकारात्मक वातावरण बनाने में सक्षम होते हैं, जिससे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया प्रभावी बनती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि उनके कार्य से मिलने वाले मानसिक, भावनात्मक और भौतिक संतोष को दर्शाती है। नौकरी संतुष्टि इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक को अपने कार्यस्थल में कितना सहयोग, सम्मान और आत्म-संतोष प्राप्त हो रहा है। कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि और उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सकारात्मक संबंध होता है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक कठिन परिस्थितियों को बेहतर तरीके से संभाल सकते हैं, सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर सकते हैं और अपनी जिम्मेदारियों को संतोषजनक रूप से निभा सकते हैं। दूसरी ओर, यदि किसी शिक्षक की भावनात्मक बुद्धिमत्ता कम होती है, तो वह तनाव, निराशा और कार्यस्थल पर असंतोष का अनुभव कर सकता है, जिससे उसकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है। वर्तमान डिजिटल युग में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है, शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। AI आधारित शिक्षा प्रणाली शिक्षकों के कई कार्यों को आसान बना सकती है, जैसे कि स्वचालित ग्रेडिंग, डेटा विश्लेषण और व्यक्तिगत शिक्षण योजना तैयार करना लेकिन यह छात्रों की भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरी तरह नहीं समझ सकती। शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता यह सुनिश्चित करती है कि वे AI तकनीकों का प्रभावी रूप से उपयोग करते हुए भी छात्रों के साथ एक मानवीय और संवेदनशील दृष्टिकोण बनाए रखें। इस प्रकार, AI और EI का संयोजन शिक्षकों के लिए एक प्रभावी शिक्षण वातावरण तैयार करने में सहायक हो सकता है। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास करें, ताकि वे न केवल अपनी नौकरी से

संतुष्टि प्राप्त कर सकें, बल्कि छात्रों के शैक्षिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि और उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंधों का विश्लेषण करना है साथ ही यह भी समझना है कि कैसे AI आधारित शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है।

### भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और प्रभावी रूप से उपयोग करने की क्षमता को दर्शाती है। यह अवधारणा डैनियल गोलेमैन द्वारा लोकप्रिय की गई, जिन्होंने इसे पाँच प्रमुख घटकों में विभाजित किया : आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन। आत्म-जागरूकता का अर्थ है व्यक्ति की अपनी भावनाओं को पहचानने और उनके प्रभाव को समझने की क्षमता। यह आत्म-परिक्षण और आत्म-विश्लेषण को बढ़ावा देता है, जिससे व्यक्ति अपनी कमजोरियों और क्षमताओं को बेहतर समझ पाता है। आत्म-नियंत्रण का तात्पर्य उन भावनाओं को नियंत्रित करने और नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से बचने की योग्यता से है। यह व्यक्ति को तनावपूर्ण स्थितियों में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है और उसके निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। प्रेरणा, जो आंतरिक ऊर्जा और लक्ष्य की ओर बढ़ने की क्षमता को संदर्भित करती है, व्यक्तियों को आत्म-विकास के लिए प्रेरित करती है। यह केवल बाहरी इनाम पर निर्भर नहीं होती, बल्कि व्यक्ति की अपनी इच्छाशक्ति पर आधारित होती है, जिससे वह चुनौतियों का सामना करते हुए भी अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर रहता है। सामाजिक जागरूकता में दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके दृष्टिकोण को अपनाने की योग्यता शामिल होती है, जो किसी भी पेशे में प्रभावी संचार और सहयोग के लिए आवश्यक होती है। संबंध प्रबंधन भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि यह व्यक्ति को प्रभावी रूप से टीमवर्क करने, विवादों को हल करने, नेतृत्व करने और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में सहायता करता है। शिक्षकों, प्रबंधकों, डॉक्टरों और सेवा क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। आज के डिजिटल युग में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यस्थलों और शिक्षण संस्थानों में अपनी जगह बना रही है, वहाँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। मशीनें डेटा को प्रोसेस कर सकती हैं, लेकिन मानवीय भावनाओं को समझने और उनके अनुसार प्रतिक्रिया देने की क्षमता केवल इंसानों में होती है। इसीलिए, शिक्षकों और पेशेवरों के लिए अपने भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशलों को विकसित करना आवश्यक हो गया है। शोध दर्शाते हैं कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सफल होते हैं, मानसिक तनाव को प्रभावी ढंग से संभालते हैं और अपने कार्यस्थल पर सकारात्मक माहौल बनाए रखते हैं। वे प्रभावी निर्णय लेने, टीम का नेतृत्व करने और सहकर्मियों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत, कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोग तनाव, असंतोश और सामाजिक टकराव का अधिक सामना करते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने के लिए आत्म-विश्लेषण, ध्यान, सहानुभूति विकसित करना, सक्रिय रूप से सुनना और भावनात्मक प्रतिक्रिया को नियंत्रित करने का अभ्यास करना आवश्यक है। शिक्षण, प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवा और ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि इन पेशों में भावनात्मक संबंधों की प्रमुख भूमिका होती है। आधुनिक शिक्षा और पेशेवर विकास कार्यक्रमों में अब भावनात्मक बुद्धिमत्ता को एक महत्वपूर्ण कौशल के रूप में शामिल किया जा रहा है, जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में अधिक सफल हो सकें।

### शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि

शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि उनके पेशेवर जीवन की गुणवत्ता और मानसिक संतुलन को दर्शाती है। यह कई कारकों पर निर्भर करती है, जैसे कि कार्यस्थल का वातावरण, वेतन, करियर विकास के अवसर, सहकर्मियों और प्रशासन के साथ संबंध, कार्यभार और छात्रों के साथ संवाद। एक शिक्षक का मुख्य उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पढ़ाना नहीं होता, बल्कि वह छात्रों के समग्र विकास में भी योगदान देता है। जब शिक्षक को उसके कार्य का सम्मान, स्वतंत्रता और सहयोग मिलता है, तो उसकी नौकरी संतुष्टि बढ़ती है। शिक्षक की नौकरी संतुष्टि केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं होती, बल्कि इसका सीधा प्रभाव छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर भी पड़ता है। एक संतुष्ट शिक्षक कक्षा में अधिक ऊर्जा, उत्साह और सकारात्मकता लाता है, जिससे छात्रों की रुचि और सीखने की क्षमता बढ़ती है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक असंतुष्ट होता है, तो इसका प्रभाव उसकी शिक्षण शैली, कक्षा प्रबंधन और छात्रों के प्रदर्शन पर पड़ सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता नौकरी संतुष्टि को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। एक शिक्षक जो अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझता और नियंत्रित करता है, वह तनावपूर्ण परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से संभाल सकता है और बेहतर पेशेवर संबंध बना सकता है। आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन जैसे EI के घटक शिक्षक की संतुष्टि और कार्यक्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं। तकनीकी प्रगति, विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन ने शिक्षकों की भूमिका को बदल दिया है। अब AI आधारित शिक्षण उपकरण शिक्षकों के प्रशासनिक कार्यों को कम करने में मदद कर रहे हैं, जिससे वे शिक्षण की रचनात्मक और व्यक्तिगत पहलुओं पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। हालांकि, शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वे AI को अपने सहायक के रूप में कितनी सहजता से स्वीकार करते हैं और इसका प्रभावी उपयोग करते हैं। नौकरी संतुष्टि को बनाए रखने के लिए शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर मिलने चाहिए, जिससे वे नई शिक्षण विधियों और तकनीकों को सीख सकें। कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखना भी आवश्यक है ताकि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रेरित रहें। स्कूल और प्रशासन को भी शिक्षकों के प्रति सहयोगी रवैया अपनाना चाहिए, जिससे वे अपने कार्य को अधिक आत्मविश्वास और खुशी के साथ कर सकें। अंततः शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को बनाए रखने और सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब शिक्षक संतुष्ट और प्रेरित होते हैं, तो वे छात्रों के लिए एक आदर्श बनते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं।

### भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी संतुष्टि का संबंध

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी संतुष्टि के बीच गहरा संबंध है, विशेष रूप से शिक्षण जैसे पेशे में, जहाँ शिक्षक न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि छात्रों के साथ भावनात्मक रूप से भी जुड़े होते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता पाँच प्रमुख घटकों— आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन पर आधारित होती है, जो शिक्षकों की कार्यक्षमता और नौकरी में संतोष को प्रभावित करते हैं। एक उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला शिक्षक कक्षा में उत्पन्न तनावपूर्ण स्थितियों को सहजता से संभाल सकता है, छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बना सकता है और संस्थान में एक सहयोगी वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। इसके विपरीत, जिन शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अभाव होता है, वे अकसर कार्यस्थल के तनाव, विद्यार्थियों के व्यवहार और प्रशासनिक दबाव को सही तरीके से प्रबंधित नहीं कर पाते, जिससे

उनकी नौकरी संतोष में कमी आ सकती है। शोधों से पता चलता है कि जो शिक्षक अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, सहकर्मियों और छात्रों की भावनाओं को समझने और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होते हैं, वे अधिक संतुष्ट रहते हैं और अपने कार्य में आनंद महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव के कारण शिक्षकों की भूमिका में बदलाव आ रहा है लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता उन्हें इन तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप ढालने में मदद करती है। AI आधारित शिक्षण उपकरण डेटा प्रदान कर सकते हैं, लेकिन छात्रों की व्यक्तिगत भावनात्मक आवश्यकताओं को केवल एक शिक्षक ही समझ सकता है इसलिए जब शिक्षक अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सही उपयोग करते हैं, तो वे AI तकनीक के साथ तालमेल बिटाकर शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकते हैं, जिससे उनकी नौकरी संतुष्टि भी बढ़ती है। EI से लैस शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मजबूत और सहानुभूतिपूर्ण संबंध बना पाते हैं, जिससे न केवल शिक्षकों को संतुष्टि मिलती है बल्कि छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार आता है। यह भी देखा गया है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक प्रबंधन और सहकर्मियों के साथ अधिक सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं, जिससे कार्यस्थल पर एक सकारात्मक माहौल बनता है और उनकी पेशेवर असंतोष की भावना कम होती है। साथ ही, आत्म-प्रेरित शिक्षक नई शिक्षण रणनीतियों को अपनाने, अपनी स्किल्स को सुधारने और व्यक्तिगत विकास के अवसरों को तलाशने में अधिक रुचि रखते हैं, जिससे वे अपने कार्य से अधिक संतुष्ट रहते हैं। निष्कर्षतः, भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह न केवल शिक्षकों को तनाव से निपटने में मदद करता है बल्कि उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में भी संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है। विशेष रूप से, जब शिक्षा प्रणाली AI जैसी तकनीकों से प्रभावित हो रही है, तब EI की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह शिक्षकों को भावनात्मक चुनौतियों को समझने और प्रबंधित करने में सक्षम बनाती है। इसलिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे वे अपने कार्य में न केवल अधिक दक्ष बनें बल्कि अधिक संतुष्ट और प्रेरित भी महसूस करें।

### **कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका**

शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी, व्यक्तिगत और डेटा-संचालित बन रही है। हालांकि, AI जहां गणनात्मक और विश्लेषणात्मक कार्यों को आसान बना सकता है, वहीं यह भावनाओं को समझने, सहानुभूति विकसित करने और सामाजिक संपर्क को बेहतर बनाने में सीमित रहता है। ऐसे में, शिक्षकों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। AI के आगमन के बावजूद, शिक्षा में मानवीय पहलू को बनाए रखना आवश्यक है, और यही कार्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता द्वारा संभव हो पाता है। AI-समर्थित कक्षा में, शिक्षक केवल विषयवस्तु प्रदाता नहीं होते, बल्कि वे छात्रों की मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को भी समझते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के पांच घटक— आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन शिक्षकों को एक संवेदनशील, सहानुभूतिपूर्ण और प्रभावी शैक्षिक वातावरण बनाने में मदद करते हैं। AI विभिन्न शैक्षिक उपकरणों, जैसे कि चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट और व्यक्तिगत शिक्षण प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों में सहायता करता है, जिससे वे छात्रों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ने के लिए स्वतंत्र होते हैं। उदाहरण के लिए, AI स्वचालित ग्रेडिंग और डेटा

एनालिटिक्स के माध्यम से छात्रों के प्रदर्शन का विश्लेषण कर सकता है, लेकिन उनके सीखने की कठिनाइयों को पहचानकर सही मार्गदर्शन प्रदान करने का कार्य शिक्षक की EI पर निर्भर करता है। इसके अलावा, AI के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली नैतिक और भावनात्मक चुनौतियों को संबोधित करने में भी EI की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब छात्रों को AI द्वारा उत्पन्न पाठ्यक्रम सामग्री और व्यक्तिगत फीडबैक मिलता है, तब शिक्षक अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके यह सुनिश्चित करते हैं कि यह जानकारी छात्रों के मानसिक और भावनात्मक विकास के अनुकूल हो। AI डेटा-आधारित समाधान प्रदान कर सकता है, लेकिन छात्रों के आत्मविश्वास, प्रेरणा और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देना शिक्षकों की EI पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म से हतोत्साहित महसूस करता है, तो केवल एक संवेदनशील शिक्षक ही उसकी चिंता को समझ सकता है और उसे प्रेरित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, AI का प्रभाव केवल शिक्षकों और छात्रों तक सीमित नहीं है, यह सहकर्मी शिक्षकों, अभिभावकों और शैक्षिक प्रशासकों के साथ संबंधों को भी प्रभावित करता है। एक उच्च EI वाला शिक्षक AI टूल्स का उपयोग करते हुए सहयोगात्मक वातावरण बना सकता है, जिससे शिक्षण समुदाय अधिक प्रभावी रूप से कार्य कर सकता है। AI और EI का संतुलित उपयोग न केवल शिक्षकों के पेशेवर विकास में सहायक है बल्कि यह छात्रों के लिए भी एक समृद्ध और संपूर्ण सीखने का अनुभव प्रदान करता है। शिक्षा में AI के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, यह आवश्यक है कि शिक्षकों को EI के महत्व को समझाया जाए और उन्हें अपने भावनात्मक कौशल को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। भविष्य की कक्षाओं में, जहाँ AI शिक्षण प्रक्रिया को अधिक स्वचालित बना देगा, वहाँ शिक्षक अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझेंगे, जिससे शिक्षा न केवल तकनीकी रूप से उन्नत बल्कि संवेदनशील और प्रभावी भी बनेगी।

### **AI और EI के संयोजन से शिक्षकों को होने वाले लाभ**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संयोजन शिक्षकों के लिए शिक्षा प्रणाली में नए अवसर और दक्षता ला सकता है। AI स्वचालित प्रक्रियाओं, डेटा विश्लेषण और व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करने में सहायक होता है जबकि EI शिक्षकों को भावनात्मक समझ, सहानुभूति और संचार कौशल विकसित करने में मदद करता है। इन दोनों के संतुलित उपयोग से शिक्षक न केवल अपने शिक्षण कौशल को उन्नत कर सकते हैं बल्कि छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समावेशी बना सकते हैं। जब AI कक्षा में डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद करता है तब शिक्षक अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सीखने की गति और रुचि के अनुसार शिक्षण को अनुकूलित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, AI-आधारित लर्निंग एनालिटिक्स यह पहचान सकता है कि कौन से छात्र संघर्ष कर रहे हैं लेकिन शिक्षक की भावनात्मक बुद्धिमत्ता यह निर्धारित करने में सहायक होगी कि इन छात्रों की सीखने की कठिनाइयों का मूल कारण क्या है और उन्हें प्रेरित करने के लिए कौन-सी रणनीतियाँ अपनाई जाएँ। इसके अलावा, AI द्वारा स्वचालित ग्रेडिंग और प्रशासनिक कार्यों को संभालने से शिक्षकों को छात्रों के साथ अधिक व्यक्तिगत बातचीत करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे अपने भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत कर सकते हैं। AI के माध्यम से शिक्षक डिजिटल टूल्स, चौटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट्स का उपयोग करके छात्रों के प्रश्नों का उत्तर त्वरित रूप से दे सकते हैं, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ और प्रभावी बनती है। वहीं, शिक्षक की EI उन्हें यह समझने में सक्षम बनाती है कि छात्र किस मानसिक

और भावनात्मक स्थिति में हैं, जिससे वे अधिक संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ उनकी सहायता कर सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता से लैस शिक्षक AI की सहायता से छात्रों की सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा को भी सशक्त बना सकते हैं, जिससे छात्र केवल विषय-वस्तु ही नहीं बल्कि जीवन कौशल भी सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, AI और EI का संतुलन शिक्षकों को उनकी खुद की पेशेवर संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने में भी मदद करता है क्योंकि वे तकनीकी सहायता के माध्यम से कार्यभार को कम कर सकते हैं और अपनी ऊर्जा को शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने में केंद्रित कर सकते हैं। जब शिक्षक AI को अपनाते हैं, तो उनके लिए नई शिक्षण पद्धतियाँ विकसित करने और छात्रों के साथ अधिक इंटरैक्टिव लर्निंग अनुभव बनाने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। हालाँकि, केवल AI पर निर्भर रहना शिक्षा को यांत्रिक बना सकता है, इसलिए शिक्षकों को अपनी EI का उपयोग करके छात्रों के साथ मानवीय संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है। भविष्य में, AI और EI का सामंजस्य शिक्षा क्षेत्र में नए बदलाव लाएगा, जहाँ शिक्षक न केवल एक ज्ञान स्रोत होंगे, बल्कि वे छात्रों के लिए एक मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत के रूप में भी कार्य करेंगे। इस संयोजन के माध्यम से शिक्षा अधिक समावेशी, व्यक्तिगत और प्रभावी बनेगी, जिससे शिक्षक और छात्र दोनों लाभान्वित होंगे।

### **निष्कर्ष**

भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों के पेशेवर जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह उनकी नौकरी संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। एक शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसे छात्रों के साथ संवाद स्थापित करना, उनकी भावनाओं को समझना और कक्षा का समुचित प्रबंधन भी करना पड़ता है। ऐसे में, शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता उन्हें तनावपूर्ण परिस्थितियों से निपटने, छात्रों की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने और अपने सहकर्मियों व अभिभावकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखने में सहायता करती है। नौकरी संतुष्टि किसी भी पेशेवर के लिए मानसिक संतुलन और करियर स्थिरता का संकेत होती है। जब शिक्षक अपने कार्यस्थल पर सहयोगी वातावरण का अनुभव करते हैं, उन्हें स्वायत्तता मिलती है, और वे अपनी भूमिका में अर्थपूर्णता देखते हैं, तो वे अधिक संतुष्टि महसूस करते हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक कठिनाइयों को एक चुनौती के रूप में देखते हैं और समाधान खोजने में सक्षम होते हैं, जबकि कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक तनाव और असंतोष का शिकार हो सकते हैं, जिससे उनकी कार्यक्षमता और छात्रों के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। तकनीकी विकास, विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षण प्रक्रिया को बदल रहा है और शिक्षकों के लिए नए अवसर और चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहा है। AI डेटा-संचालित शिक्षण रणनीतियों को प्रदान कर सकता है, लेकिन शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता ही छात्रों के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने और उनके शैक्षिक विकास में योगदान देने में सहायक होती है। जब AI स्वचालित ग्रेडिंग, कक्षा प्रबंधन और अन्य प्रशासनिक कार्यों को संभालता है, तो शिक्षकों को अपने छात्रों के मानसिक और भावनात्मक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है। यह साबित हो चुका है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक AI-संचालित शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी ढंग से अपनाते हैं और नई तकनीकों के साथ तालमेल बिटाने में सक्षम होते हैं। इसलिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वे बदलते शैक्षिक परिवेश में अपनी भूमिका को प्रभावी बनाए रख

सकें। जो शिक्षक आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन जैसे EI घटकों को विकसित कर लेते हैं, वे अपने पेशे में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं और बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, जो शिक्षक इन कौशलों की कमी रखते हैं, वे अधिक तनावग्रस्त होते हैं और उनके लिए कक्षा प्रबंधन एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है। AI के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, शिक्षकों की भूमिका अपरिहार्य बनी हुई है, क्योंकि मशीनें केवल डेटा विश्लेषण कर सकती हैं, लेकिन मानवीय संवेदनाओं और भावनात्मक जुड़ाव की जगह नहीं ले सकतीं। इसलिए, एक शिक्षक के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संतुलित उपयोग करना आवश्यक है ताकि वे अपने छात्रों के लिए एक बेहतर शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकें। अंततः, भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल है, जो न केवल उनकी नौकरी संतुष्टि को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें शिक्षा प्रणाली में प्रभावी और सशक्त बनाता है।

### सन्दर्भ

1. गोलेमैन, ड. (1995). "इमोशनल इंटेलिजेंस : व्हाई इट कैन मैटर मोर देन आईक्यू". न्यूयॉर्करू बैनटम बुक्स।
2. मिश्रा, एस. (2018). "भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक की कार्य संतुष्टि का अध्ययन". भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), पृ० सं०- 45-60।
3. गुप्ता, आर. (2020). "शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव". नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
4. शर्मा, पी. (2017). "शिक्षण पेशे में तनाव प्रबंधन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 22(4), पृ० सं०- 102-115।
5. सिंह, ए. (2021). "एआई और शिक्षा : भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका". शिक्षा एवं समाज, 10(1), पृ० सं०- 30-42।
6. यादव, के. (2019). "शिक्षकों के पेशेवर विकास में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका". विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. चौधरी, एम. (2016). "शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध". भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 28(3), पृ० सं०- 55-70।
8. पांडे, डी. (2022). "शिक्षा प्रणाली में तकनीकी परिवर्तन और शिक्षकों की मानसिकता". पुणेरू एडुकेशन टेक्नोलॉजी प्रेस।
9. कुमार, एस. (2015). "भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण कौशल का प्रभाव". दिल्ली : एलीट एजुकेशनल बुक्स।
10. वर्मा, आर. (2023). "एआई युग में शिक्षकों के लिए नई चुनौतियाँ". इंडियन जर्नल ऑफ डिजिटल लर्निंग, 12(2), पृ० सं०- 75-90।